गोवा विश्वविद्यालय
शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला
हिंदी अध्ययन शाखा

नावशी गाँव सर्वेक्षण रिपोर्ट

2023-2024

8/05/24
12/20

नाम:अनम खलीफा
कक्षा: स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष
अनुक्रमांक: 23PO140053
II SEM END EXAMINATION

08-05-2024

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU
GOA

अनुक्रमणिका

1 परिचय

2 प्रस्तावना

3 नाउशी गाँव का परिचय

4 संस्कृतिक परिचय
- धर्म
- त्योहार
- पूजा स्थाल
- भाषा
- खान-पान

5 जनसंख्या

6 सामाजिक-आर्थिक स्थिति
- रोज़गार
- शिक्षा

7 गाँव की समस्याँ
- मरीना बे
- मच्छवारों की समस्याँ
- महिलाओ की समस्याँ
- बरसात के मौसम मे गाँव की स्थिति

8 हिंदी भाषा का ज्ञान

9 स्वच्छता अभियान की जानकारी

10 सरकारी योजना

11 गाँव की लोगों की अपेक्षाएँ

12 निष्कर्ष

परिचय

भारत में ग्रामीण अध्ययनों में ग्रामीण जीवन के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पहलुओं को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण ग्रामीण समुदायों के रहने की स्थिति, उनकी आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण उपकरण हैं। ये सर्वेक्षण विकास कार्यों की योजना बनाने, उन्हें लागू करने और उनका मूल्यांकन करने के लिए मूल्यवान जानकारी प्रदान करता हैं जिनका लक्ष्य ग्रामीणों के जीवन स्तर और उनकी भलाई में सुधार करना होता है। एक सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण आम तौर पर गाँव के विभिन्न पहलुओं को जांचता करता है, जैसे की जनसंख्या, सामाजिक- सांस्कृतिक परिवेश, गाँव की आर्थिक स्थिति, शिक्षा,गाँव के लोगों की अपेक्षाएँ आदि।

यह रिपोर्ट गोवा के नाउशी गाँव में किए गए एक सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण के निष्कर्षों को प्रस्तुत करती है।

इस गाँव के अध्ययन के लिए हमने व्यक्तिगत और समूह में गाँव का साक्षात्कार किया था। हमने उस गाँव के कुछ बुजुर्गों से भी बात की। रिपोर्ट का लक्ष्य ग्रामीणों की वर्तमान स्थिति और उनके सामने आने वाली चुनौतियों के साथ-साथ भविष्य के लिए उनकी आकांक्षाओं और अपेक्षाओं का एक व्यापक और विश्वसनीय चित्र प्रदान करना है।

प्रस्तावना

गाँव के सर्वेक्षण की रिपोर्ट एक दस्तावेज़ है जो एक ग्रामीण समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और मुद्दों की व्यापक और व्यवस्थित अध्ययन के परिणाम प्रस्तुत करता है। रिपोर्ट का उद्देश्य गाँव का विस्तृत और समग्र चित्र प्रदान करना है, जैसे कि जनसंख्या, सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, गाँव की आर्थिक स्थिति, शिक्षा,गाँव की लोगों की अपेक्षाएँ और समस्याएँ और संभावनाएँ जैसे विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है।यह रिपोर्ट में हम गाँव के बदलते स्वरुप को देख सकते है। वर्तमान का गाँव पूर्व के समय के गाँव से काफ़ी भिन्न है। पूर्व की तुलना में आज का गाँव अधिक विविध और विकसित है।

रिपोर्ट के आधार परिमार्जन डेटा पर आधारित है जो 4 अप्रैल 2024 को नाउशी गाँव में आयोजित किए गए एक सर्वेक्षण के माध्यम से एकत्रित किया गया था। सर्वेक्षण में एक संरचित प्रश्नोत्तरी का उपयोग किया था जिससे गाँव के लोग का साक्षात्कार लिया गया।

मुझे आशा है कि यह रिपोर्ट नाउशी गाँव को बेहतर समझने में सहायक साबित होगी, और गाँव में जो आवश्यक बदलाव होना चाहिए वह लाएगी।

1.नाउशी गाँव का परिचय

नाउशी गाँव तालीगाँव में स्तिथि एक छोटा सा गाँव है। यह गाँव बाम्बोली समुद्र तट से घिरा हुआ है, लेकिन गाँव के लोग इसे नाउशी समुद्र तट कहते हैं। पूरे गाँव के चारो ओर सिर्फ पानी ही पानी दिखाई देता है जो उस गाँव की खुबसूरती अधिक बडाता है। इस गाँव में दैनिक आवश्यकताओं की अच्छी सुविधा है।गाँव में पानी, नियमित बिजली, पक्की सड़कें, नेटवर्क सुविधा उपलब्ध है। इस गाँव में पहले पानी की बहुत समस्याँ थी लोगों को दूर कुवे के पास चलते जाना पड़ता था। गाँव में सिर्फ 2 कूवे थे। गाँव में विकास 1980 के बाद से देखा जा सकता है। 1980 के पहले घरों में पानी नहीं आता था। गाँव में पहले बिजली की भी बहुत समस्या थी। लोग पेट्रोल के दियों का इस्तेमाल करते थे लेकिन बिजली में विकास भी 1984 के हुआ। आज गाँव में यातायात सुविधा तो नहीं है लेकिन हर घर में अपनी खुद के वाहन है। आस-पास के इलाके में स्कूल, बैंक और अस्पताल जैसे कुछ महत्वपूर्ण और बुनियादी संस्थान तो स्थित हैं, लेकिन गाँव के अंदर नहीं हैं। गाँव की सीमा के अंदर सिर्फ एक बालवाड़ी है जिसे 14 साल से भी ज्यादा हो चुके हैं। गाँव के लोगो के नाम - सुमांत रोड्रिगेस, गीता परेरा, xanum divcar है- यह दर्शाते हैं कि नाउशी गाँव पुर्तगाली प्रभाव का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। पुर्तगालीयों ने यहाँ के लोगों का धर्मांतरण कर उन्हें जबरदस्ती ईसाई धर्म अपनाने पर मजबूर किया। कुछ लोगों ने अपना नाम बदल दिया लेकिन कई सारे लोग अपने पुराने नाम से ही जाने जाते है। पूरे गाँव में सिर्फ हिन्दू समुदाय के लोग रहते है। गाँव में ज़्यादातर घरों में बंटवारा हो चुका है। इसका मतलब है कि माता-पिता

अपने बच्चों और उनके परिवारों से अलग रहते हैं। एक ही घर में कई पीढ़ियां एक साथ नहीं रहती हैं। इस गाँव के लोगों की रोज़ी-रोटी का मुख्य साधन मछली पकड़ना है । ज्यादातर गाँव में मच्छवारे है उनके साथ- साथ कुछ लोग सरकारी नौकरी भी करते हैं। गाँव की आर्थिक स्थिति स्थिर है।गाँव में दो गुटों में विभाजन हो गया है, जिसके परिणामस्वरूप गाँव में दो मंदिर स्थापित हुए। एक सातेरी मंदिर, जहाँ पालकी उत्सव मनाया जाता है, और दूसरा मंदिर गणपति जी का है, जहाँ गणेश उत्सव मनाया जाता है। दोनों गुट एक-दूसरे के साथ संवाद तो करते हैं, लेकिन जब एक गुट का कार्यक्रम होता है, तो दूसरे गुट से बहुत कम लोग भाग लेते हैं, और इसी तरह, जब दूसरे गुट का कार्यक्रम होता है, तो पहले गुट से कम लोग भाग लेते हैं।

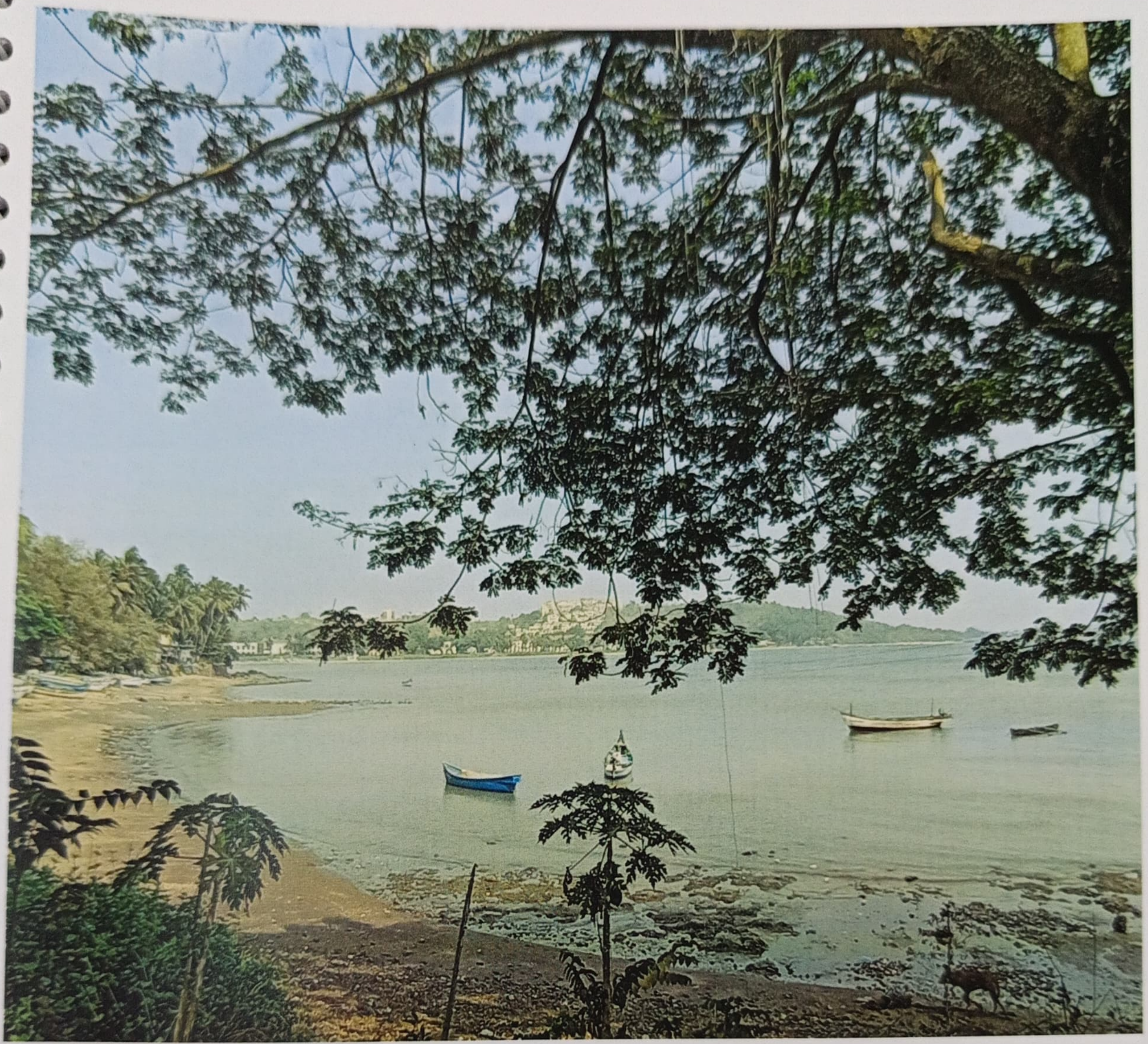

नाडशी गाँव का समूद्र तट

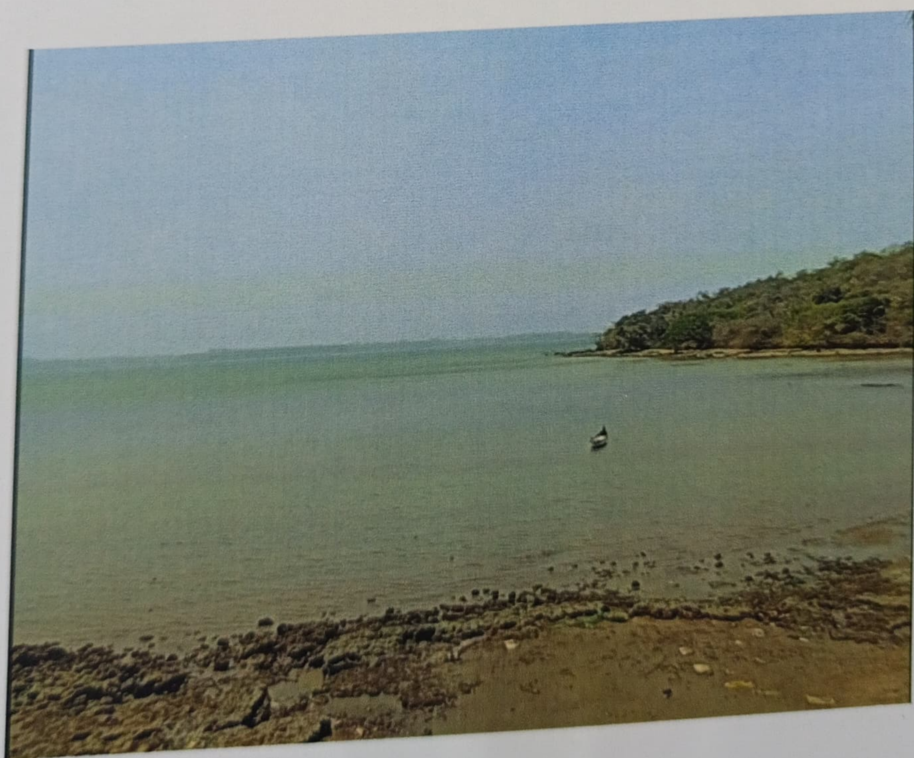

2.सांस्कृतिक परिचय

2.1 धर्म

इस गाँव के सभी लोग हिंदू हैं और हिंदू धर्म की सभी परंपराओं, त्योहारों और रीति-रिवाजों का पालन करते हैं।

2.2 त्योहार

गाँव में मनाए जाने वाले प्रमुख त्योहार हैं धालो और ज़ागोर| इसके साथ साथ पालकी और गणेश उत्सव भी बहुत धूम धाम से मनाया जाता है। उनके गाँव में मनाए जाने वाले त्योहार 'धालो' की खास बात यह है कि यहाँ पुरुष मुख्य होते हैं। पुरुष ही नृत्य करते हैं। इसका कोई स्पष्ट कारण नहीं है, लेकिन यह उनकी पुरानी परंपरा है।

'ज़ागोर' एक रात का त्योहार है जिसमें पूरी रात नृत्य किया जाता है। ज़ागोर में, पुरुष महिलाओं की तरह कपड़े पहनकर रात भर नृत्य करते हैं। वे हिंदी और कोंकणी गानों पर डांस करते हैं। ज़ागोर के 1 दिन पहले चर्च का जो क्रॉस होता है, उसे सजाया जाता है और उसका अनुष्ठान होता है, और अगले दिन ज़ागोर का उत्सव होता है। मंदिरों में नाटक खेले जाते हैं।

इसके बाद पालकी एक त्योहार है जो 5 दिन तक चलता है जिसमें खाना-पीना की सभी सुविधाए होती है और रात को नाटक खेले जाते हैं।

इस त्योहार में औरते अच्छे से सजती सवरती है। और इस गाँव में 'होली' रात को खेली जाती है।

2.3 पूजा स्थल

गाँव में मुख्य रूप से दो मंदिर हैं: ~~बेतल~~ गणपति और केलबाई। यह मंदिर सातेरी को समर्पित है। सातेरी के मंदिर में पालकी का उत्सव मनाया जाता है जो 5 दिन का होता है। बेतल मंदिर भगवान गणपति को समर्पित है। केलबाई मंदिर में पालकी का आयोजन होता है, बेतुल में गणेश उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है।

2.4 भाषा

गाँव में मुख्य रूप से कोंकणी बोली जाती है

2.5 खान पान

गाँव वालो का मुख्य खाना मछली है क्योंकि वे मछुआर हैं। और उनकी कमाई का ज़रिया मछली पकड़ना है इसके साथ ही वे अपने खेतों में सब्जियाँ उगाते हैं, इसलिए अधिकांश गाँव वाले सब्जियाँ भी खाते हैं जैसे मूली, हरी सब्ज़ी आदि। यह उनकी पोषण का प्रमुख स्रोत है।

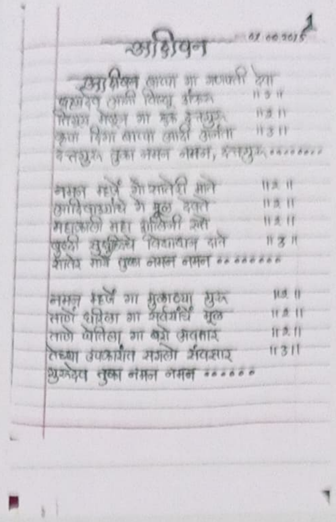

गाँव की लोकसंस्कृति

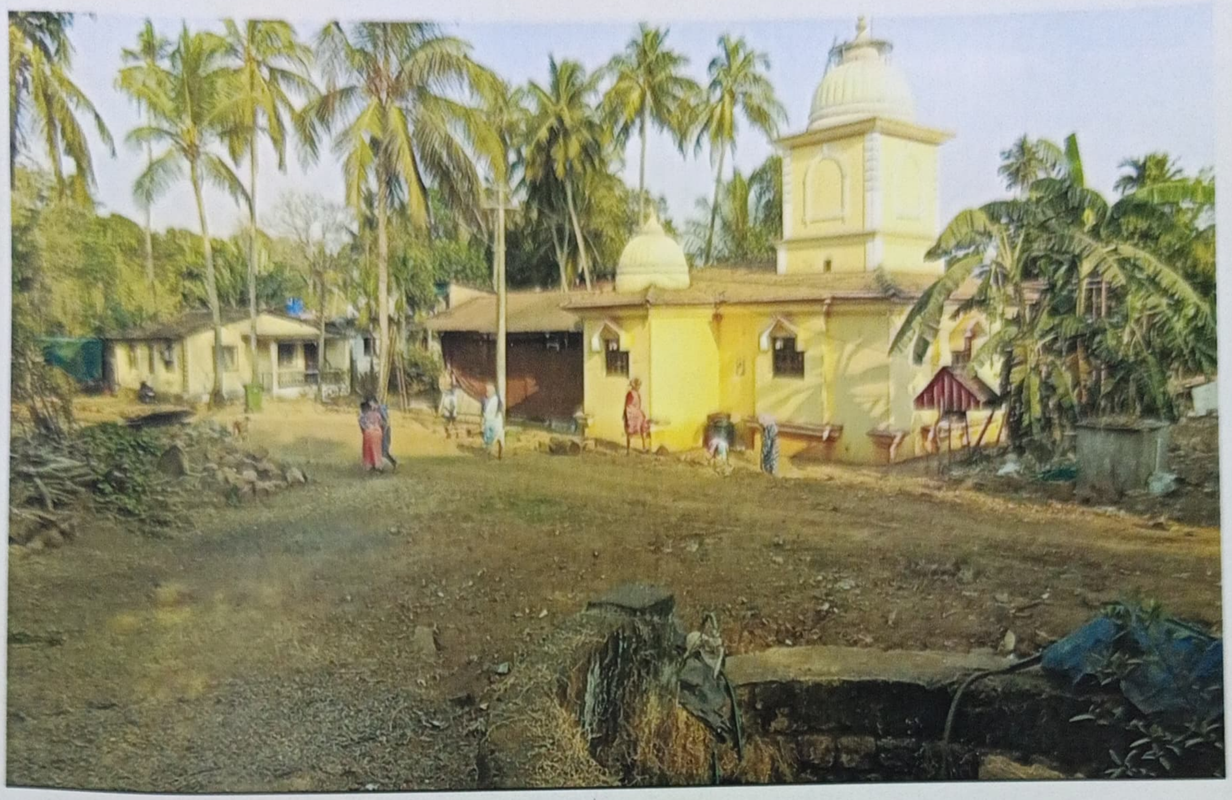

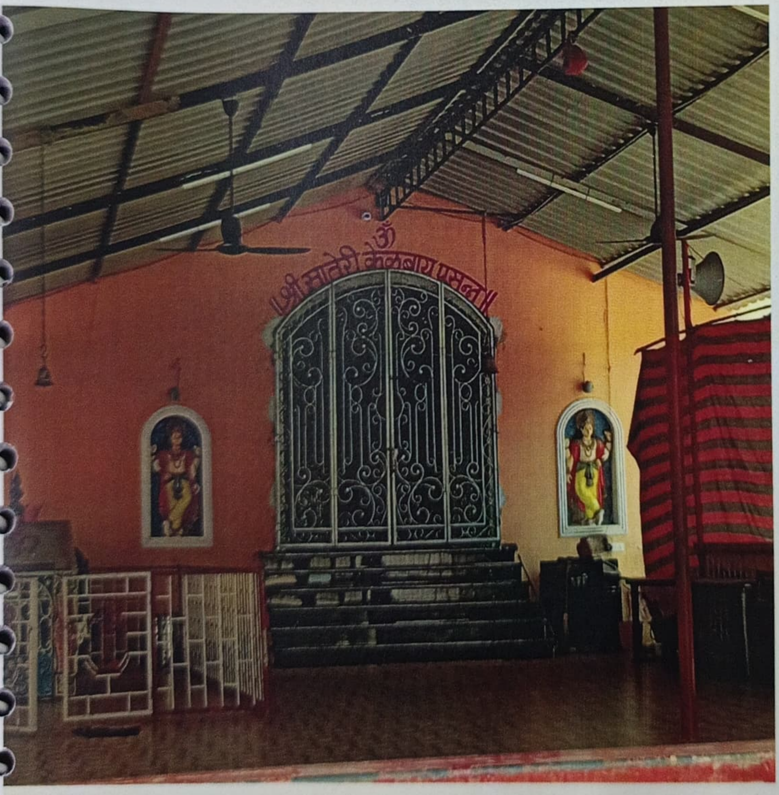

गाँव के मंदिर

3.जनसंख्या

गाँव वालों की कुल आबादी का सही आंकड़ा बता पाना मुश्किल है। हमने विभिन्न लोगों से बात की और उनसे मिले आंकड़े अलग-अलग थे। पहले जिनसे हमने बात की वे सागुन कोंकणकर थे, जो गाँव के राखंडार हैं। उन्होंने आबादी 400-500 के बीच बताई। सोमनाथ कोंकणकर ने 500 , बालवाड़ी की शिक्षिका मानसी कोंकणकर ने 200 बताई, वहीं विनाय पाळकर ने 500 से ज्यादा का आकड़ा बताया।
इस जानकारी के आधार पर, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि गाँव के लोगों की कुल आबादी 450 से 500 के बीच हो सकती है।

4.सामाजिक-आर्थिक स्थिति

4.1 रोजगार

मछली पकड़ना इस गाँव का मुख्य व्यवसाय है। गाँव के आधे लोग सरकारी नौकरी करते हैं।

मछली पकड़ने के लिए लोग सुबह 5 बजे से 7 बजे के बीच बम्बोली समुद्र तट पर चले जाते हैं।घर के पुरुष मछली पकड़ने का काम करते हैं और महिलाएँ बाजार में मछली बेचने का। पति-पत्नी दोनों मिलकर आमदनी के लिए यह काम करते हैं।यहाँ मिलने वाली आम मछली तारली है। इसके अलावा, अलग-अलग मौसम में अलग-अलग मछलियाँ मिलती हैं, जैसे कि कलवा, किंगफिश आदि। चूंकि सार्वजनिक वाहन उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए वे मछली बाजार तक ले जाने के लिए अपने निजी वाहन का इस्तेमाल करते हैं। उन्हें हर महीने 200 रुपये का पेट्रोल की जरूरत होती है। सरकार से उन्हें पहले तो सालाना 50,000 रुपये पेट्रोल के लिए मिलते थे, जो अब घटकर 30,000 रुपये हो गए हैं।

4.2शिक्षा

गाँव की शिक्षा स्थिति ज़्यादा खराब नहीं है। ज्यादातर लोग 8वीं कक्षा तक पढ़े है, कुछ 9वीं और कुछ 10वीं तक । कई लोग नौकरी करते हैं,

खासकर सरकारी नौकरियाँ। यहाँ तक कि गाँव में एक व्यक्ति 2006 में एल.एल.बी करने में सफल रहा है और एक बीकॉम स्नातक भी है। हालांकि, नाउशी गाँव में कोई स्कूल या कॉलेज नहीं है, सिर्फ एक बालवाड़ी है जो 40 साल पुरानी है। वहाँ केवल 3 साल के उम्र के 4 बच्चे पढ़ने आते हैं। बालवाड़ी का समय सुबह साढ़े आठ बजे से साढ़े बारह बजे तक है। वहाँ की मुख्य शिक्षिका मानसी कांकणकर हैं। हर छह महीने में वहां बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण भी किया जाता है। बालवाड़ी के बाद ज्यादातर बच्चे रेड रोज़री स्कूल या सांताक्रूज स्कूल में आगे की पढ़ाई के लिए चले जाते हैं|

5.गाँव की समस्या

5.1 मरीना बे

गोवा के लिए दो मरीना के प्रस्ताव रखे गए हैं; आश्चर्यजनक रूप से दोनों एक-दूसरे के करीब हैं; एक सांकोले गाँव में और दूसरा उत्तरी किनारे पर नाउशी गाँव में।स्थानीय मछुआरों ने इस प्रोजेक्ट के खिलाफ विरोध किया है। उनका कहना है कि यह समुद्री प्रवेश को बाधित करेगा और समुद्री पारिस्थितिकी पर नकारात्मक प्रभाव डालेगा।

मरीना बे प्रोजेक्ट नाउशी गाँव के निवासियों पर कई नकारात्मक प्रभाव पड़ेंगे।

मछली पकड़ने पर प्रभाव:

नाउशी गाँव के निवासियों के लिए मछली पकड़ना मुश्किल हो जाएगा। मछली पकड़ने के पारंपरिक तरीके प्रभावित होंगे।मछली पकड़ने की आय में कमी आएगी।प्रोजेक्ट से समुद्री प्रदूषण बढ़ सकता है, जिससे मछली प्रजनन प्रभावित हो सकता है। मछली की कुछ प्रजातियां विलुप्त होने का खतरा हो सकती हैं।

पर्यावरण पर प्रभाव गहरा होगा। प्रोजेक्ट से समुद्री जीवन और तटीय पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान हो सकता है।

प्रदूषण से समुद्री जल की गुणवत्ता खराब हो सकती है।

कई मछुआरों को अपनी आजीविका खोनी पड़ सकती है। पर्यटन से जुड़े रोजगार भी प्रभावित हो सकते हैं।

गाँव वालों को अभी तक इस बात का आश्वासन नहीं दिया गया है कि यदि परियोजना से उनके काम को नुकसान होता है तो उनकी मदद कैसे की जाएगी। समुद्र तट के किनारे घरों के लोगों को भी घर खाली करना पड़ सकता है।

मरीना बी प्रोजेक्ट नाउशी गाँव और उसके निवासियों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। परियोजना को आगे बढ़ाने से पहले इन प्रभावों का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करना महत्वपूर्ण है।

5.2 मच्छवारों की समस्या

गाँव में मछुआरों के लिए पेट्रोल (patrol) की समस्याँ है। उन्हें सालाना 30,000 रुपये मिलते हैं, पर ये उनके लिए काफी नहीं होते। गाँव में सरकारी बस नहीं आती, इसलिए वे मछली बेचने गाँव के शुरूआती हिस्से तक जाते हैं जहाँ से बस मिलती है, पर दिक्कत ये है कि बस वाले उन्हें बस में मछली ले जाने नहीं देते। ऐसे में वो अपनी निजी वाहन से ही जाते हैं, पर मछली ज्यादा होने से उन्हें कम से कम गाड़ी पर दो फेरे लगाने पड़ते हैं। इससे समय और पेट्रोल दोनों की परेशानी होती है। उनका कहना है अगर सरकारी बस गाँव में आए और उन्हें

मछली ले जाने दे या फ़िर अगर सरकार से उन्हें पेट्रोल के खर्चे के लिए ज़्यादा रकम मिल जाए तो उनकी समस्याँ हल हो जाएगी।

5.3 महिलाओं की समस्या

गाँव की महिलाओं के लिए गाँव में कोई भी सुविधाऐं नहीं है। शिक्षा के अवसरों की कमी तो है ही, साथ ही मनोरंजन और कौशल विकास के साधन भी बहुत कम हैं।

लड़कियों के लिए गाँव के अंदर कोई स्कूल या शिक्षा केंद्र नहीं है। कुछ सीखने के लिए उन्हें गाँव से बाहर जाना पड़ता है, जो कई बार संभव नहीं होता है। महिलाओं के लिए कराटे, गायन, नृत्य जैसी कोई कक्षाएं नहीं हैं। न ही कोई महिला मंडल है जहाँ वे इकट्ठा हो सकें और सामाजिक गतिविधियों में भाग ले सकें।

यह स्थिति महिलाओं के लिए निराशाजनक है।

5.4 बरसात के मौसम मे गाँव की स्थिति

बरसात का मौसम गाँव वालों के लिए मुसीबतों का दौर लेकर आता है। इस दौरान उन्हें कई तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। बारिश का पानी ज्यादातर घरों में घुस जाता है, खासकर हॉल जैसे

निचले इलाकों में तो पानी भर जाना आम बात है। इससे रहने-खाने में दिक्कत होती है और सामान भी खराब हो जाता है।

घरों की छतें तेज़ बारिश और हवा से कमज़ोर पड़ जाती हैं। इससे घरों की ऊपरी परत उखड़ कर गिरने का खतरा रहता है, जो जान-माल के लिए खतरनाक हो सकता है। हर साल बरसात में गाँव के कुछ घरों को यह समस्याँ सहनी पड़ती हैं।

समुद्र का उफान:- चूंकि गाँव समुद्र के किनारे बसा हुआ है, इसलिए बारिश के दिनों में जब समुद्र का जलस्तर बढ़ता है, तो तूफान आने का खतरा रहता है। इससे न सिर्फ समुद्र का पानी गाँव में आता है, बल्कि किनारे के रास्ते भी पानी में बह जाते है।

6. हिंदी भाषा का ज्ञान

गाँव के लोगों से बातचीत के आधार पर पता चला कि 50 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों में हिंदी ज्ञान की कमी है। पहले के समय में गाँव में शिक्षा व्यवस्था कम विकसित थी, और पहले के लोग बचपन से ही खेती बाड़ी करने में लग जाते थे जिसके कारण 50 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों में से कई लोगों को स्कूल जाने का अवसर नहीं मिला। गाँव में क्षेत्रीय भाषा का अधिक प्रयोग होता है, जिसके कारण लोगों को हिंदी सीखने की कम आवश्यकता महसूस होती थी।

वहाँ की नई पीढ़ी अच्छी खासी हिंदी बोल पाते है जिसका कारण है टेलीविजन और अन्य मीडिया में हिंदी भाषा का व्यापक रूप से प्रयोग होता है।बच्चे कार्टून और अन्य कार्यक्रम देखते हुए हिंदी भाषा सीखते हैं।स्कूलों में हिंदी भाषा को अनिवार्य विषय बनाया गया है, जिससे बच्चों को हिंदी सीखने में मदद मिलती है।

गाँव में चल रहे निर्माण कार्य (construction) में ज़्यादातर मज़दूर हिंदी बोलते हैं, इसलिए गाँव के लोगों को हिंदी भाषा का प्रोयाग करना पड़ता है जिससे वे हिंदी बोल और सिख पाते है।

गाँव के मछुआरे

7. स्वच्छता अभियान की जानकारी

2001 में गाँव में स्वच्छता अभियान हुआ था जिसके तहत लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ी ।

मुन्सिपाल्टी की गाड़ी नियमित रूप से गीला और सूखा कचरा अलग-अलग उठाकर ले जाती है, जिसके कारण गाँव में कचरे से संबंधित कोई समस्या नहीं है।लेकिन घर के पास के नाले की सफाई के लिए कोई नहीं आता, जिसके कारण गंदी बदबू फैलती है और मच्छर भी बहुत अधिक पनपते हैं। यह स्थिति स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

8.सरकारी योजना

गाँव के लोगों से बातचीत करने पर पता चला कि उन्हें सरकार द्वारा कई तरह की योजनाओं का लाभ मिल रहा है। सरकार ने गाँवों में शौचालय बनवाए हैं, जिससे लोगों को स्वच्छता बनाए रखने में मदद मिल रही है। सरकार ने गाँवों में सड़कें बनवाई हैं, जिससे लोगों का आना-जाना आसान हो गया है।

पंचायत में मुफ्त स्वास्थ्य जांच (health check-up) आयोजित किए जाते हैं, जिससे लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं आसानी से मिल रही हैं।

काम पर जाने वाले लोगों को प्रति वर्ष 1500 मिलते हैं । सरकारी नौकरी करने वालों को यह लाभ नहीं मिलता है। 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों को प्रति वर्ष 2000 की पेंशन मिलती है।विधवा महिलाओं को भी वित्तीय सहायता मिलती है, सरकारी नौकरी करने वाली विधवा महिलाओं को यह लाभ नहीं मिलता है।

जब भी बारिश जैसी प्राकृतिक आपदाओं के कारण लोगों को परेशानी होती है, तो 'उन्नत भारत संस्था' जैसी संस्थाएं उनकी मदद करती हैं। उदाहरण के लिए, पिछली बारिश में घरों को नुकसान होने पर लोगों को 7000 की सहायता राशि प्रदान की गई थी। गाँव के लोगो को रामराव जैसे स्थानीय नेताओं से भी बहुत मदद मिलती है।

यह जानकारी दर्शाती है कि सरकार गाँव के लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए कई योजनाएं चला रही है।

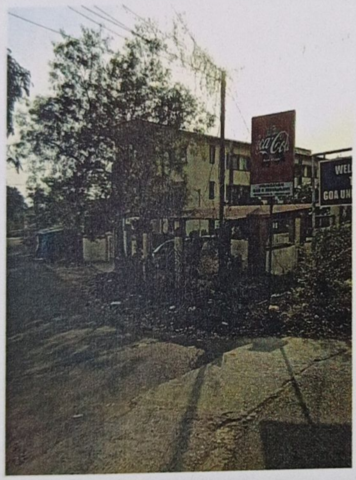

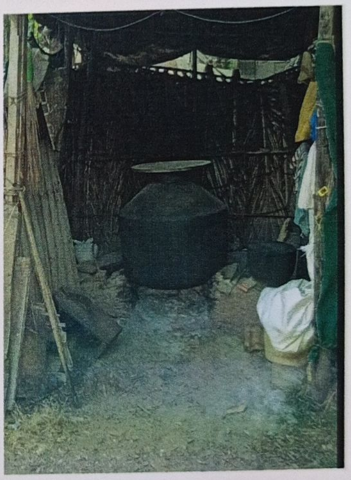

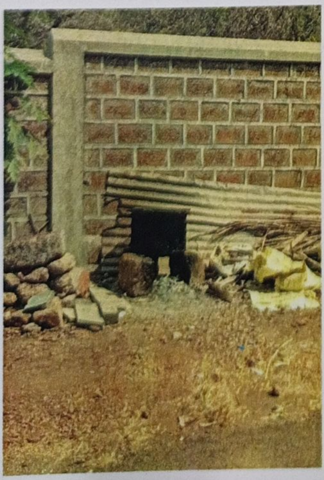

9.गाँव की लोगों की अपेक्षाएँ

मरीना बे परियोजना का विरोध: ग्रामीणों को डर है कि इस परियोजना से पूरे गाँव को नुकसान होगा। उन्हें पर्यावरणीय क्षति, जल प्रदूषण, और सामाजिक-आर्थिक व्यवधानों की चिंता है।

महिलाओं के लिए सुविधाए: महिलाए गाँव में शिक्षा, कौशल विकास, और सामाजिक गतिविधियों के लिए बेहतर सुविधाओं की माँग करती हैं। उनकी अपेक्षा है कि उनके लिए शिक्षा, कौशल विकास, और सामाजिक गतिविधियों के लिए केंद्रों की स्थापना की जानी चाहिए।

मछुआरों के लिए बस सेवा: मछुआरों को मछली बाजार तक पहुचाने में कठिनाई होती है।मछुआरों को बेहतर परिवहन सुविधा, बाजार तक पहुंच, और ऋण सुविधा प्रदान की जा सकती है। वे गाँव में बस सेवा की माँग करते हैं

बालवाड़ी में सुधार: बालवाड़ी की शिक्षिका बच्चों के लिए पर्याप्त जगह और खिलौनों की कमी से चिंतित हैं।बालवाड़ी में बच्चों के लिए पर्याप्त जगह और खिलौनों की व्यवस्था की जा सकती है।

नाली की सफाई: ग्रामीणों को डर है कि गंदे नालों से बीमारियां फैल सकती हैं। वे चाहते हैं कि नालियों की नियमित सफाई हो।

सार्वजनिक शौचालय: पुरुषों के समुद्र तट पर शौचालय जाने की प्रथा से महिलाओं को आपत्ति है। वे गाँव में अधिक सार्वजनिक शौचालय चाहते हैं। गाँव में सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण किया जा सकता है।

हमें गाँव के शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए प्रयास करना चाहिए। दूसरे, स्थानीय उत्पादों को प्रमोट करने और स्थानीय व्यापारों का समर्थन करने के लिए उद्‌यमिता को बढ़ावा देना चाहिए। तृतीय, पर्यावरण संरक्षण और ग्रीन ऊर्जा के लिए पहल करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। अंततः, सामुदायिक सहभागिता को मजबूत करने के लिए सभी स्तरों पर सहयोग और समर्थन की आवश्यकता है। इन प्रस्तावों के साथ, हम संगठनों, सरकारों और समुदायों को मिलकर नाउशी गाँव की ऊर्जा और उत्साह से भरी यात्रा को सफल बनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

निष्कर्ष

नाउशी गाँव का सर्वेक्षण हमारे लिया एक अच्छा अनुभव रहा। इसने हमें गाँव के समाज, संस्कृति, इतिहास और व्यापार के बारे में गहन जानकारी प्रदान की। गोवा के पारंपरिक लोकउत्सवों का अनुभव करना भी एक अद्भुत अनुभव था। यह रिपोर्ट नाउशी गाँव के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। यह रिपोर्ट नीति निर्माताओं, विकास संस्थाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं को गाँव के विकास के लिए रणनीति बनाने में मदद कर सकती है।

यह रिपोर्ट नाउशी गाँव की कहानी है, जो विकास और समृद्धि की ओर एक उम्मीद भरी यात्रा है। यह यात्रा तभी सफल होगी जब सभी मिलकर प्रयास करेंगे।